पर्यावरण कक्षा बन गई पढ़ने की घण्टी

डॉ. केवल आनन्द काण्डपाल

सारांश : "पढ़ना ज्ञान की दुनिया में प्रवेश करना और उसके साथ चलना है।" (पाउलो फ़्रेरे)[1]

भारतीय भाषाओं का शिक्षण : राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र कहता है, "स्कूली बच्चों के अध्यापकों को अपनी कक्षाओं में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उनमें पढ़ना सिखाना सबसे कठिन एवं स्फूर्तिवान चुनौती है। पढ़ना सिखाना (समझकर पढ़ना सिखाना) सबसे कठिन चुनौती इसलिए भी है कि पढ़ना एक साधारण कौशल नहीं है, इसमें अन्य कौशल और बोध क्षमताएँ भी शामिल हैं और दूसरा, पढ़ना सिखाने की कोई एक अचूक विधि का दावा नहीं किया जा सकता है।... यह एक स्फूर्तिवान काम इसलिए भी है कि बच्चे के सीखने का आगामी जीवन बहुत कुछ इसी बात पर निर्भर करेगा।"[2] कक्षा में बच्चों को समझकर पढ़ने के अवसर किस प्रकार से सृजित किए जा सकते हैं, इसके दृष्टिगत शासकीय विद्यालय की कक्षा 6 के साथ काम के अनुभवों को इस आलेख के माध्यम से साझा किया गया है। –सं.

मेरी स्वाभाविक रुचि इस बात में रहती है कि बच्चे अपने-अपने विषयों में किस तरह सीख रहे हैं, इसके लिए बच्चों से लगातार संवाद की ज़रूरत होती है। मेरा अनुभव है कि छोटे बच्चे अपनी अकादमिक चुनौतियों को प्रकट कर देते हैं, बनिस्बत बड़े बच्चों के। इसलिए कक्षा 6 में 'पर्यावरण' विषय पर बच्चों के साथ काम करना शुरू किया। शिक्षा सत्र 2023-24 की यह बात है।

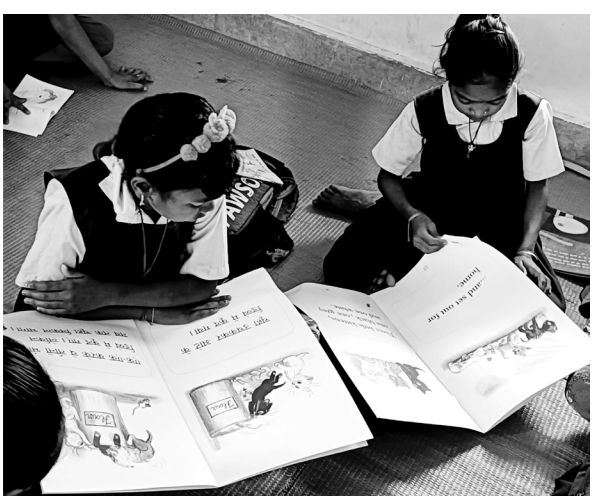

विद्यालय की कक्षा 6 में 19 बच्चे नामांकित थे। इनमें 8 बालक और 11 बालिकाएँ थीं। बच्चों के आसपास के पेड़-पौधों, वनस्पति, प्रकृति, संस्कृति, आर्थिकी, सामाजिकी, इतिहास और राजनीति पर अवलोकन, और इन अवलोकनों पर बातचीत से कक्षा 6 के पर्यावरण विषय की शुरुआत हुई। इस बातचीत में अधिकांश बच्चों ने, अपनी घर की भाषा, कुमाउनी के शब्दों का इस्तेमाल किया जो स्वाभाविक भी था। कुछ बच्चे शुरुआत में बहुत

मुखर नज़र नहीं आ रहे थे, लेकिन धीरे-धीरे सभी बच्चे अपनी बात रखने लगे। वस्तुतः बच्चों की घर की भाषा पर्यावरण विषय का एक अहम हिस्सा है और दूसरा, इस तरह की छूट देने से बच्चे अपनी बात को अच्छी तरह से रख पा रहे थे। यह क्रम लगभग एक माह तक चला। अब यह ज़रूरी था कि विषय को ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए पठन सामग्री की व्यवस्था की जाए। अतः छोटी-छोटी कहानियाँ, कविताएँ, गीत, वीडियो, आदि जुटाए गए। सामग्री के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया कि इसमें बच्चों के स्तर और रुचि के अनुकूल चित्र भी शामिल हों।

पर्यावरण कक्षा पढ़ने की घण्टी बन गई

कक्षा में पढ़ने की शुरुआत करनी ही थी। सामग्री पढ़ने की शुरुआत में ही यह तथ्य सामने आया कि बच्चे पढ़ने में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसका आकलन करने पर यह तथ्य सामने आया कि केवल 7 बच्चे ही धाराप्रवाह तरीक़े से पढ़ रहे हैं, 6 बच्चे रुक-रुक कर कुछ पढ़ रहे हैं, और 6 बच्चे वर्णों को मिलाकर पढ़ पा रहे हैं। मसलन, 'कमला' शब्द को क-म-ल-आ। धाराप्रवाह पढ़ रहे बच्चों से पढ़े हुए टेक्स्ट के बारे में अपने शब्दों में बताने के लिए कहा गया तो बच्चे पढ़े हुए को हूबहू बताने की कोशिश करते नज़र आए। स्पष्ट था कि बच्चे समझकर नहीं पढ़ रहे थे। इस आकलन के बाद पर्यावरण की कक्षा का केन्द्रीय बिन्दु 'समझकर पढ़ना सीखना' हो गया। इसके लिए बहुत ज़रूरी था कि बच्चों को इस बात के लिए मुतमईन किया जाए कि वर्णों को मिलाकर शब्दों को किसी प्रकार से उच्चारित कर लेना ही पढ़ना नहीं है बल्कि पाठ्य वस्तु को पढ़ने के साथ-साथ समझते जाना भी ज़रूरी है। बातचीत में बच्चों ने यह स्वीकार भी किया, "हम पढ़ तो रहे हैं, लेकिन पढ़ने के साथ-साथ बात कम ही समझ में आ रही है। ऐसा हमारे साथ दूसरे विषयों में भी होता है।" (यह फ़ीडबैक उन बच्चों का था जो बिना अटके हुए टेक्स्ट को पढ़ पा रहे थे।) इसलिए कक्षा 6 की पर्यावरण की कक्षा को पठन कक्षा में व्यवहृत करना ज़रूरी हो गया था। इसके पीछे यह विश्वास था कि यदि बच्चे समझकर पढ़ना सीखेंगे तो इससे न केवल पर्यावरण विषय की विषय-वस्तु को पढ़ना सीखेंगे बल्कि दूसरे विषयों में भी उन्हें इसका लाभ ज़रूर मिलेगा। इस प्रकार पर्यावरण कक्षा पढ़ने की घण्टी बन गई।

पठन वादन के लिए, पठन साहित्य जनपद बागेश्वर के डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से विभिन्न प्रकार की पठन सामग्री उपलब्ध हुई। *बरखा* सीरीज़ की छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ, एकलव्य की *चकमक*, तूलिका प्रकाशन की छोटी पुस्तिकाएँ, *प्लूटो*, *साइकिल*, आदि मुझे इस संस्थान से लगातार मिलती रही हैं। श्री महेश पुनेठाजी के सौजन्य से झोला पुस्तकालय में 50 पुस्तकें मिल गईं। इनमें से बहुत-सी पुस्तिकाएँ इन बच्चों के लिए उपयोगी थीं। मैंने विद्यालय के छोटे पुस्तकालय से भी बच्चों के स्तर और रुचि

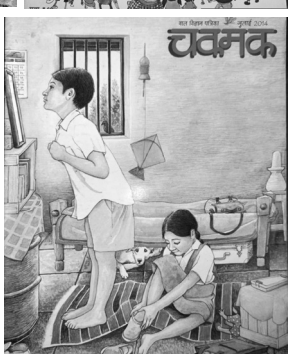

के अनुरूप पुस्तिकाएँ-पत्रिकाएँ खोज निकालीं। इस प्रकार से कक्षा के 19 बच्चों के लिए तक़रीबन 350 पुस्तिकाएँ-पत्रिकाएँ उपलब्ध हो गईं। पढ़ना सीखने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों की आयु, कक्षा और रुचियों के अनुकूल पठन सामग्री बहुलता के साथ उपलब्ध कराई जाए। यह पठन सामग्री विषयों की पठन सामग्री से इतर भी होनी चाहिए ताकि बच्चों की विविधतापूर्ण अभिरुचियों को तुष्ट किया जा सके। इस सम्बन्ध में जेम्स ब्रिटन का कहना है, "बच्चों की रुचियों के अनुरूप पर्याप्त पठन सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए जिसे पढ़ने पर उनकी अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विस्तार हो। इसके साथ-साथ यह सामग्री ऐसी भी होनी चाहिए जो उन्हें विश्व से जोड़ती हो।"[3]

पठन कक्षाएँ

कक्षा 6 के पर्यावरण शिक्षा के कालांश को पठन कक्षा में रूपान्तरित करने के लिए ज़रूरी पठन सामग्री (चित्र पुस्तिकाएँ, छोटी पुस्तिकाएँ, बाल पत्रिकाएँ, आदि) जुटाने के बाद बच्चों के साथ मिलकर इसके कुछ नियम बनाए गए। मसलन–

1. बच्चे अपनी पसन्द की पठन सामग्री का चयन कर सकते हैं। पुस्तिका से अपनी पसन्द का कोई हिस्सा या पूरी पुस्तिका पढ़ सकते हैं;

2. अपनी पसन्द की पठन सामग्री को पढ़कर अपने घर भी ले जा सकते हैं। इसका लेखा-जोखा बारी-बारी से बच्चे ही मिलकर रखेंगे;

3. पढ़ने की कक्षा से अलग किसी स्थान पर पढ़ना चाहें तो ऐसा भी कर सकते हैं, लेकिन अन्त में यह बताना ज़रूरी होगा कि उन्होंने क्या पढ़ा; क्या अच्छा लगा; और क्यों अच्छा लगा;

चित्र : हीरा धुर्वे

4. बच्चे अकेले, किसी साथी के साथ, या छोटे समूह में पढ़ सकते हैं। किसी दिन पढ़ने का ज़्यादा मन न हो तो अपने मन का कोई काम कर सकते हैं, लेकिन ऐसा सभी बच्चों की सहमति से किया जा सकता है;

5. बच्चों के साथ-साथ मुझे भी पठन कक्षा में पढ़ना होगा, और बच्चों की पठन सामग्री से ही (यह सुझाव बच्चों की तरफ़ से था); और

6. जब बच्चों द्वारा सारी पठन सामग्री पढ़ ली जाएगी, मुझे नई सामग्री लानी होगी। (इससे संकेत मिलते हैं कि बच्चे पठन सामग्री की बहुलता और विविधता की आकांक्षा रखते हैं।)

पठन कक्षा की शुरुआत में ही यह साफ़-साफ़ नज़र आया कि पढ़ने में चुनौती महसूस करने वाले बच्चों ने छोटी पुस्तिकाओं का चयन किया जिनमें टेक्स्ट कम और चित्र अधिक हों। जो बच्चे पढ़ने के शुरुआती स्तर पर थे उनके साथ *बरखा* सीरीज़ की एक लाइन, दो लाइन की पुस्तिकाओं के साथ मैंने ख़ुद काम करना शुरू किया। कुछ बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी उनके साथियों ने भी ली। इससे यह अन्तर्दृष्टि मिलती है कि बच्चे एक दूसरे की मदद को तैयार रहते हैं। यह उपक्रम लगभग डेढ़ माह तक चला। इसके बाद क्रमशः इसमें पर्यावरण विषय की पाठ्य वस्तु को शामिल किया जाता रहा। वर्षभर चली इन पठन कक्षाओं / पर्यावरण कक्षाओं के अनुभव इस प्रकार हैं :

चित्र : प्रशांत सोनी

1. **शुरुआती पठन कक्षाओं के अवलोकन और अनुभव** : शुरुआती पठन कक्षाओं में बच्चे अपनी पठन रुचि और सामर्थ्य का अनुमान नहीं लगा पा रहे थे। हर बच्चे को वह पुस्तिका, पत्रिका या पुस्तक चाहिए होती थी जो दूसरे बच्चे के हाथ में हो। पढ़ने में चुनौती का सामना कर रहे बच्चे भी ऐसी सामग्री हाथ में ले रहे थे जिसे पढ़ पाना उनके लिए मुमकिन नहीं था। मैंने इसमें कोई दख़ल नहीं दिया। कुछ ही दिनों में पठन चुनौती का सामना कर रहे बच्चों ने आकर बताया कि वे चयनित किताब पढ़ नहीं पा रहे हैं। अब उनकी पठन ज़रूरत और पठन चुनौती को ध्यान में रखते हुए *बरखा* सीरीज़ की एक लाइन, दो लाइन, और इसी प्रकार आगे की पुस्तिकाएँ दी गईं। मैंने ख़ुद काम किया, और इस काम में कुछ संवेदनशील बच्चों ने सहयोग किया। इसके अलावा, सभी बच्चों की ज़रूरत पड़ने पर और ज़रूरत रहने तक मदद की गई। साथ ही, मैं भी बच्चों के साथ उनकी कोई-न-कोई पठन सामग्री पढ़ता रहा।

2. **पठन सामग्री से जो कुछ भी पढ़ा उसके बारे में बताना** : इस तरह पठन कक्षाओं में बच्चों के पढ़ने का सिलसिला जारी रहा। बच्चे पठन कुशलता के पिछले स्तर से आगे बढ़ते रहे। हालाँकि, सभी बच्चों की प्रगति एक समान नहीं रही। कुछ बच्चे तेज़ी से यह कुशलता हासिल करते दिखे वहीं कुछ में यह प्रगति अपेक्षाकृत कम नज़र आई। बच्चे ख़ुद की पढ़ी हुई पठन सामग्री से बताने को भी उत्सुक नज़र आए। हालाँकि, पठन सामग्री को अपने शब्दों में बताने में वे अभी भी कठिनाई का

सामना करते दिखे। जो बच्चे पठन चुनौतियों से जूझ रहे थे, वे भी अपने पढ़े हुए को बताने के बारे में उत्सुक थे। अपनी साथी को पढ़ाने का काम कर रहीं बच्चियों का कहना था, "सर, यह पढ़ पा रही है।" बच्चे टेक्स्ट पर अंगुली रखकर पढ़ पा रहे थे।

3. **समझकर पढ़ना और अपनी पठन रुचि को पहचानना** : इस चरण में बच्चे पढ़ी हुई पठन सामग्री के बारे में अपने शब्दों में बताने में सफल प्रतीत हो रहे थे, और किसी पुस्तिका, पुस्तक या पत्रिका को पढ़ने के लिए अपने दोस्तों को रिकमंड करते भी दिखे। कुछ बच्चे कहानियाँ लिखने की भी कोशिश कर रहे थे। इस चरण में मैंने भी बच्चों से किसी-किसी पुस्तिका के बारे में बातचीत करना शुरू कर दिया था। मसलन, इसकी विषय-वस्तु क्या है; इसको क्यों पढ़ना चाहिए; आदि। यहाँ यह उल्लेख करना ज़रूरी है कि कुछ बच्चे इस स्तर पर पहुँचने में अभी भी समर्थ नहीं हो पाए हैं। उनकी लगन, पठन रुचि और आत्मविश्वास से यह भरोसा पुख़्ता होता है कि आने वाले समय में जल्दी ही ये बच्चे भी यहाँ तक ज़रूर पहुँच जाएँगे। इसी दौर में, मैंने पर्यावरण विषय की पुस्तक पर काम करना शुरू कर दिया था। मैंने पाया कि पर्यावरण विषय में दिए गए गृहकार्य को बच्चे अपने शब्दों में करके लाने लगे। सालाना परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाओं का अवलोकन और मूल्यांकन करते समय यह महत्त्वपूर्ण बात भी सामने आई कि बच्चों के उत्तर हूबहू किताब से न होकर उनके अपने शब्दों में थे। यह एक महत्त्वपूर्ण संकेत है कि जब बच्चे समझकर पढ़ना सीख जाते हैं, उनकी लिखित अभिव्यक्ति में भी यह परिलक्षित होता है।

अनुभव के निहितार्थ

1. स्कूली स्तर पर पढ़ने की चुनौतियों से जूझ रहे बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए उपयुक्त पठन सामग्री एक फ़ायदेमन्द निवेश साबित हो सकती है। स्कूली स्तर पर पढ़ना सीखने के लिए क्रमशः वर्ण, शब्द और वाक्य सिखाने की बजाय सीधे टेक्स्ट का इस्तेमाल पढ़ना सीखने के लिए अधिक कारगर साबित हो सकता है। पढ़ना सीखने के लिए पढ़ने की शुरुआत पुस्तकों से करना कहीं अच्छा और ज़रूरी है। फ़्लैश कार्ड, चार्ट जैसी चीज़ें कभी-कभी काम आ सकती हैं पर वे पढ़ना सीखने की वैसी तेज़ और स्थाई इच्छा पैदा नहीं कर सकतीं जैसी किताबें दे सकती हैं।

चित्र : हीरा धुर्वे

2. एक बार जब बच्चा प्राथमिक स्तर को पार करके स्कूल में उच्च कक्षाओं में पहुँच गया है, और पठन सम्बन्धी चुनौतियों से जूझ रहा है, ऐसे में वर्णमाला से शुरुआत करने की कोई तुक नज़र नहीं आती है। यह कक्षा में बच्चे पर एक अलग क़िस्म का दबाव पैदा करता है, और इससे बच्चे को पढ़ने और समझकर पढ़ने में ज़्यादा मदद भी नहीं मिल पाती है।

3. पठन कुशलता सीखने के शुरुआती दौर में व्याकरणिक और शाब्दिक शुद्धता पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देने से बच्चे विषय-वस्तु या पाठ्य वस्तु को समझने की बजाय शुद्ध एवं शब्दशः पढ़ने में उलझ जाते हैं। ऐसे में उनका समझना गौण हो जाता है। यदि बच्चे ने 'मैं गाँव पहुँचा' को 'मैं गाँव गया था' पढ़ लिया तो इसे बच्चे को रोक कर तुरन्त ठीक करने की जल्दबाज़ी की ज़रूरत नहीं है। इससे वाक्य के अर्थ में कोई बदलाव नहीं हुआ, और समझकर पढ़ना ऐसे ही होता है।

4. हम सभी जानते हैं कि हमारे पढ़ने के तरीक़े अलग-अलग होते हैं। हम अलग-अलग तरह से पढ़ना शुरू करते हैं। कई बार पढ़ने के बीच में रुक जाते हैं, और कुछ-कुछ करने लगते हैं। जैसे– किताब के किसी ख़ास हिस्से को पेन या पेंसिल से अंडरलाइन करना; टेक्स्ट के बग़ल में अपनी समझ के बिन्दुओं को लिखना; कोई ख़ास पन्ना मोड़ देना जिससे भविष्य में ज़रूरत पड़ने पर उसे फिर से देखा जा सके; नोट्स लेना; आदि। इस तरह के मौक़े बच्चों को भी मिलने चाहिए। हमारे स्कूलों में पुस्तकालय की पुस्तकें ख़राब हो जाने, फट जाने के डर से बच्चों की सहज पहुँच से दूर नज़र आती हैं। पुस्तकों का चुनाव करने के बहुत सीमित अवसर ही बच्चों को मिलते हैं। एक बार पुस्तकों से सरसरी तौर से गुज़रने के बाद अगले चरण में बच्चे अपनी पसन्द और रुचि को पहचानना शुरू करते हैं, और अपनी पठन अभिरुचि को चिह्नित व परिपक्व करते हैं बशर्ते पुस्तकों तक उनकी सहज पहुँच लगातार बनी रहे।

5. बच्चों की पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में उनसे लगातार संवाद की ज़रूरत है। मसलन, उन्होंने अभी तक क्या पढ़ा है; आजकल क्या पढ़ रहे हैं; आगे क्या पढ़ना चाहेंगे; पढ़े हुए को अपने शब्दों में बताना चाहेंगे; आदि। बच्चे इस तरह की बातचीत या संवाद से अभिप्रेरित होते हैं, और जो कुछ भी उन्होंने पढ़ा है या पढ़ रहे हैं उसके बारे में बताने को उत्सुक रहते हैं। बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनना उन्हें अधिक-से-अधिक पढ़ने को प्रेरित करता है। इस तरह की बातचीत या संवाद में, शिक्षक को बच्चों की पठन कुशलता और उससे सम्बन्धित प्रगति के बारे में महत्त्वपूर्ण सुराग़ मिल सकते हैं। बच्चों

की पठन कुशलता को बेहतर करने के लिए इन सुराग़ों का इस्तेमाल आगामी समय में और बेहतर रणनीति बनाने के लिए किया जा सकता है।

6. पढ़ना सिखाने के लिए गतिविधियाँ इस प्रकार से आयोजित की जानी चाहिए कि बच्चे इसके प्रत्यक्ष फल तुरन्त महसूस करने लगें। बच्चों को पढ़ना सिखाने के क्रम में उनको पढ़ने का तरीक़ा या पढ़ने के नियम सिखाने की बजाय पठन अनुभव देना बेहद ज़रूरी होता है। इन अनुभवों को बच्चे अपनी पठन कोशिशों के परिणाम के रूप में देखते हैं।

7. बच्चों की पठन कुशलता की प्रगति पर फ़ीडबैक, और फ़ीडबैक देने की प्रक्रिया की अहम भूमिका होती है। फ़ीडबैक बच्चे की पठन त्रुटि की बजाय उसकी पठन कुशलता की प्रगति के बारे में होना चाहिए, और यह वर्णनात्मक होना चाहिए। पठन कुशलता के बारे में बच्चों को फ़ीडबैक देते समय बेहद संवेदनशीलता की ज़रूरत होती है।

8. पढ़ना एक अनुकरणीय मूल्य है। विद्यालय हो या घर, बच्चों को अपने आसपास बड़े लोग पढ़ते-लिखते दिखने चाहिए। इसका बच्चों की पढ़ने की रुचि और निरन्तरता पर काफ़ी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसे में, एक समय बाद बच्चों को बार-बार पढ़ने-लिखने के लिए कहने की बहुत कम ज़रूरत पड़ती है।

समेकन

पढ़ना एक ऐसा काम है जिसे बच्चे स्वतंत्र तौर पर कर सकते हैं। यदि बच्चे समझ के साथ पढ़ना सीख सकें तो इससे उन्हें दुनिया को समझने में मदद मिल सकती है। जब बच्चे पठन कुशलता हासिल कर लेते हैं, उनके लिए लगातार पढ़ना जारी रख पाना सम्भव हो पाता है। पढ़ने के लिए उनकी दूसरों पर निर्भरता कम हो जाती है और वे स्वतंत्र पाठक बनने की दिशा में आगे बढ़ते हैं। इसमें बच्चों का कौशल, मेहनत और प्रतिबद्धता, तीनों ही शामिल होती जाती हैं। हमें बच्चों को यह अहसास कराने की ज़रूरत है कि पढ़ना आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, और वे सभी समझकर पढ़ना सीख सकते हैं। हालाँकि, इसमें कुछ समय ज़रूर लग सकता है लेकिन यह असम्भव नहीं है।

आभार

विद्यालय के कक्षा 6 के बच्चों की पढ़ना सीखने की प्रतिबद्धता, लगन और कक्षा में सृजित ऊर्जा से अभिभूत हूँ, सो इनके प्रति स्नेहिल साधुवाद अभिव्यक्त करता हूँ।

सन्दर्भ

1. फ़्रेरे, पाउलो, (2010), 'पठन कर्म का महत्त्व', *शैक्षणिक सन्दर्भ*, जुलाई-अगस्त 2010, एकलव्य, भोपाल, म.प्र.।
2. एनसीईआरटी (2009), *भारतीय भाषाओं का शिक्षण : राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र*, प्रथम संस्करण 2009, एनसीईआरटी, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016, पृष्ठ 25।
3. ब्रिटन, जेम्स, (2008), *भाषा और अधिगम*, अनुवादक : प्रमोद कुमार शर्मा, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी-7, सरस्वती कॉम्प्लेक्स, सुभाष चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092, पृष्ठ 160।

डॉ. केवल आनन्द कांडपाल ने तक़रीबन 15 वर्ष वरिष्ठ माध्यमिक में अध्यापन और एक दशक तक ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में शिक्षक-प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया है। आपने पाँच साल राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्रधान अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। वर्तमान में राजकीय इंटरमीडियट कॉलेज में प्रधानाचार्य की भूमिका में कार्यरत हैं। पत्र-पत्रिकाओं में शिक्षा पर लेख लिखते रहते हैं।

सम्पर्क : kandpalkn@rediffmail.com